IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.388

ISSN 2319-4766

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL-JUNE,2021, VOL- 10, ISSUE-51

Special Issue of Department of History, Lokmanya Mahavidyalaya Warora, Dist. Chandrapur (MS)

5th June 2021

RECENT TRENDS IN MODERN HISTORY

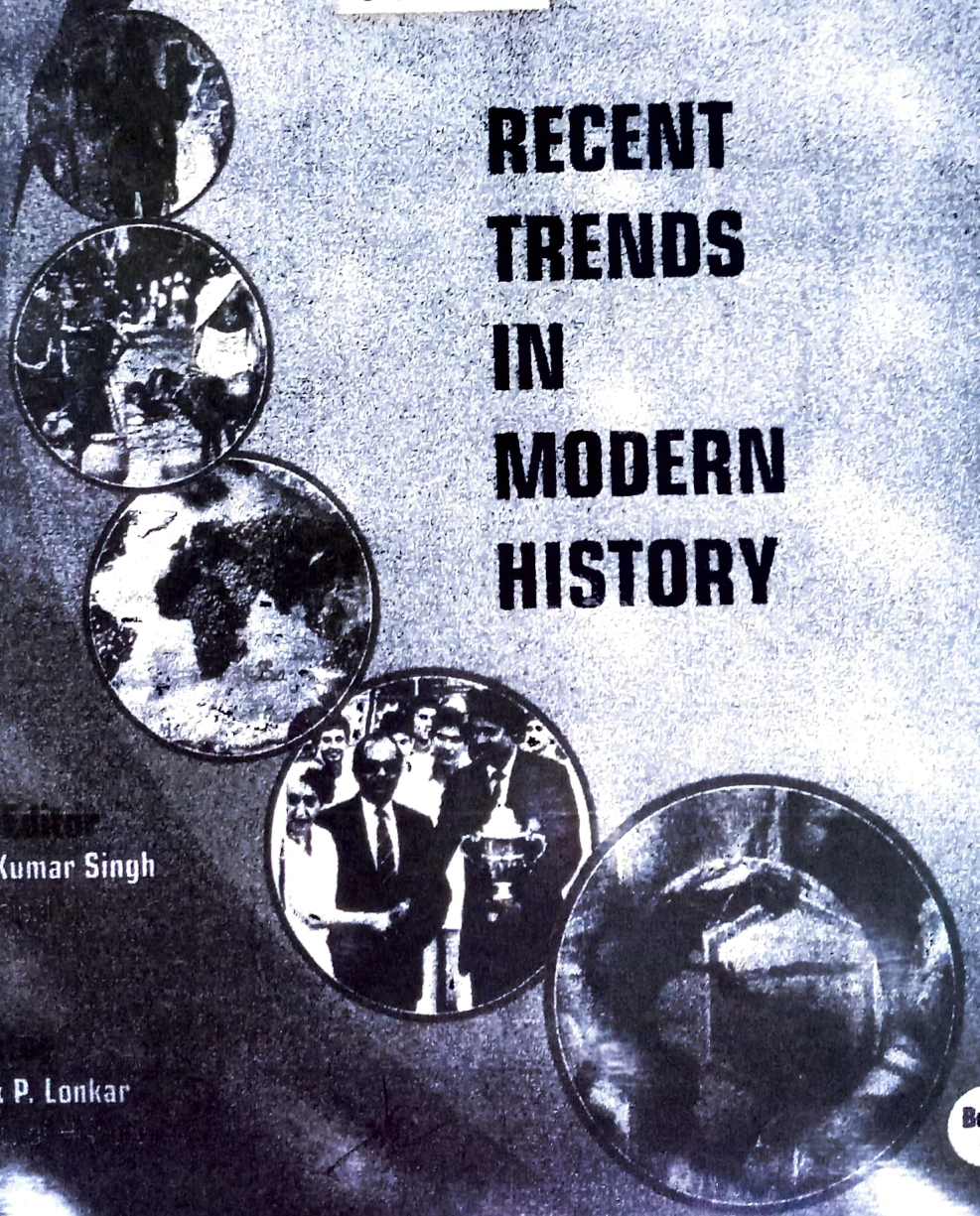

Chief Editor

Dr. Subodh Kumar Singh

Principal

Editor

Dr. Dipak P. Lonkar

Head, Dept. of History

Book 1

IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 ISSN 2319-4766

An International Peer Reviewed & Refereed Journal

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL-JUNE, 2021, VOL- 10, ISSUE-51

Index

SR. NO.	TITLE & AUTHOR NAME	PAGE NO.
1	**TRIBAL HISTORY WRITING: A NEW TREND IN SOCIAL SCIENCES** *Dr. Shamrao Koreti*	1-7
2	**WELLNESS TOURISM - A BRANCH OF TOURISM HISTORY, ONE OF THE NEW TRENDS IN MODERN HISTORY** *Dr. N G Prakasha*	8-10
3	**DIVERSITY AND TRENDS IN HISTORY** *Dr. Prakash Pawar*	11-13
4	**THE ORGANIZATIONAL SKILL OF EXTREMIST TRANSFORMED NAGPUR CITY THE STRONGHOLD OF EXTREMISM** *Dr. Prashant R. Dhage*	14-19
5	**AQUATIC ARCHITECTURE OF THE NAYAKAS –UNDER NEW TRENDS IN HISTORY CALLED LOCAL STUDIES** *Dr. Parvatamma*	20-23
6	**HISTORICAL BACKGROUND OF MEDICINE, SCIENCE AND TECHNOLOGY IN INDIA** *Prof. Santosh C. Gohokar*	24-28
7	**SPORTING AND RECREATIONAL ACTIVITIES IN ANCIENT INDIA: AN OVERVIEW** *Dr. Purnendu Kumar Kar*	29-32
8	**A STUDY ON LOCAL HISTORY OF BELAGAVI DISTRICT; ON SAVADATTI RATTA'S AND KITTUR PROVINCE** *Mr. Vishwanath M Ainapur*	33-37

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani, Distt. Bhandara

Late N. P. W. College, Lakhani
Ref No.
Dt.
Distt. Bhandara

33	**HISTORICAL STUDY OF ELECTORAL SYSTEM IN BRITISH INDIA** *Asst. Prof. Shinge Harshal Shashikant*	169-174
34	**MANUSHI : AN EARLY FEMINIST ACTIVITY IN KERALA** *Sini. P.M*	175-183
35	**इतिहास : एवं पर्यावरण** *डॉ. विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण*	184-190
36	**नारीवाद : एक ऐतिहासिक अवलोकन** *लालमोहन राम*	191-196
37	**जनपदीय इतिहास का लेखन: एक विश्लेषण** *हेमराज कुमार कुशवाहा*	197-199
38	**मुड़मा जतरा: उराँव जनजाति की ऐतिहासिक धरोहर** *कुमारी मीनाक्षी*	200-204
39	**छत्तीसगढ़ का क्षेत्रीय इतिहास लेखन बस्तर रियासत के विशेश संदर्भ में** *डॉ. महेन्द्र कुमार सार्वा*	205-207
40	**वैदिक काल में सोम वनस्पति के पर्यावरणीय, आर्थिक एवं व्यवहारिक आयाम** *संगीता कुमारी*	208-211
41	**विज्ञान में वराहमिहिर का योगदान** *रिया पाण्डेय*	212-215
42	**कठ्ठीवाड़ा रियासत का इतिहास** *डॉ. बलराम बघेल*	216-218
43	**स्थानीय इतिहास लेखन में जनजातीय वाद्ययंत्र (विवाह संस्कार के संदर्भ में)** *Dr. Manisha Kumari*	219-225
44	**रवांई में दैवीय शासन व्यवस्था का इतिहास** *डॉ. आशा राम*	226-232
45	**महात्मा गांधीजी के स्त्री उत्थान कार्य** *प्रा. डॉ. प्रमिला डी. भोयर*	233-236
46	**गंगावली क्षेत्र के चन्द मणकोटी राजा** *महिपाल सिंह कुटियाल*	237-240
47	**आधुनिक इतिहास लेखन में मौखिक स्रोतों की भूमिका** *डॉ. (श्रीमती) हेमवती ठाकुर*	241-244

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani. Distt. Bhandara

Late N. P. W. College, Lakhani
Ref. No.
Dt.
Distt. Bhandara

महात्मा गांधीजी के स्त्री उत्थान कार्य

प्रा. डॉ. प्रमिला डी. भोयर

(सहा. प्राध्यापक) इतिहास विभाग प्रमुख, स्व. निर्धन पाटील वाघाये कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, लाखनी, जि. भंडारा – ४४१८०४. E-mail id – bhandarkarpriyansh@gmail.com

Mobile no. – ९७६५८८९११३

प्रस्तावना :–

देश, काल और परिस्थितियों रूढियों को जन्म देती है । इन रूढियोंका प्रभाव स्त्रीयो पर ही पड़ता है । पुरूष अपनी स्वच्छंद प्रकृति के कारण इनसे कुछ मुक्त हो जाता है । पर अज्ञानवश अथवा शिक्षा के अभाव के कारण नारी रूढियों से चिपकी रहती है । गांधीजी न केवल भारतमाता को गुलामी की जंजीर से मुक्त कराना चाहते थे वरन वे समस्त नारी जाती को रूढियों से मुक्त कराना चाहते थे । स्त्री और पुरूष परिवाररूपी पक्षी के दो पंख है । दोनो पंख का सबल होना आवश्यक है । यदि एक पंख भी कमजोर तो पक्षी विकासगगनमे उडान भरने में असमर्थ है । नारी परिवार की धुरी है । परिवार से समाज बनता है और समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है । और सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए महिलाओंका शिक्षित होना आवश्यक है । गांधीजी ने शिक्षा के विषय मे कहा था , ''एक पुरूष को शिक्षित करने का अर्थ एक व्यक्ती को शिक्षित करना है , परन्तु एक महिला को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार को शिक्षित करना है''। गांधीजी की नारी उत्थान की भावना के कारण ही संविधान में 'समानता' की बात कही गई है ।

वैदिक काल मे भारतीय नारी की स्थिती :–

वेदोमे नारी को सम्मानजनक उच्च स्थान प्रदान करते हुए उनकी तुलना ब्रम्हा से की है । ब्रम्हा स्वयं ज्ञान के अधिष्ठाता है । ऋग्वेद मे लिखा गया है ''स्त्री ही ब्रम्हा वभुषिथ'' । वैदिक साहित्य मे स्त्री एव पुरुष को एक दुसरे का पूरक समझा गया है । वैदिक नारियों अपना गृहस्थ जीवन सफलतापूर्वक व्यतीत करने के साथ हि साथ विपत्ति आनेपर युध्द क्षेत्र में सहयोग देती थी । वैदिक साहित्य मे गार्गी – मैत्रेयी जैसी सदाचार संपन्न दार्शनिक नारियों प्रतिष्ठित हुई । वैदिक काल मे भी लडको के जन्म को अधिक महत्त्व दिया जाता था । किन्तु सुसंस्कप्त मातापिता अपनी कन्याका लालन पालन लडको के समानही करते । वैदिक काल में महिलाओं को अपना जीवन साथी चुनने की पुरी स्वतंत्रता थी । उस समय बालविवाह या सती प्रथा का प्रचलन नही था । इस काल मे पती पत्नी को एक दुसरे का पुरक माना जाता था । वास्तव मे वैदिक काल धर्मप्रधान काल था । इसलिए पुरूषों के जीवन के हर पक्ष में नारी का होना आवश्यक था । वह परिवार की मान मर्यादा की प्रतीक थी ।

मुगलकाल मे हिंदू नारी की स्थिती :–

मुस्लिम युग के प्रारंभ से ही स्त्रियोंकी स्थिती निम्न होती चली गयी । मुसलमान अपनी इच्छापूर्ती के लिए हिंदू स्त्रियों का जबरन अपहरण कर लेते थे । इसी कारण हिन्दुओ मे बेटियो का अल्पायु मे ही विवाह कर दिया जाता था तथा उनको पर्दे मे भी रखा जाने लगा । उस समय समाज मे विलासिता की प्रवृत्ति बढती चली गयी । इस विलासिती प्रवृत्ती का प्रभाव उस समय के हिंदू राजा और सरदारो पर भी पडा । और स्त्रियो की

Off. Principal
College

Late N. P. W. College, Lakhani
Ref. No.
Dt.

सामाजिक स्थिती गिरती चली गई । उस काल मे हिंदुओ के घरो मे पुत्रीका जन्मभी अशुभ माना जाता था । [illegible] जन्म के समय ही हत्या कर दि जाती थी । हिंदुओ मे विधवा विवाह वर्जित था । इस कालमे [illegible] प्रचलन था । इतना सब होने के बावजूद स्त्रियोंको शोषण नही किया जाता था । परिवार की सुख शांति [illegible] के लिए उनका सदैव आदर एव सम्मान किया जाता रहा था । पूर्वकाल की तरह मध्यकाल मे भी स्त्रियों [illegible] सामान्य थी ।

नारी के बिना पुरूष का जीवन अधुरा है । किन्तु भारत मे मुगलो के प्रवेश के साथ ही नारी के [illegible] मे संघर्ष प्रारंभ हो गया था । मुगलो की सत्ता की समाप्ती के साथ ही अंग्रेजोकी संस्कृती हमारी सभ्यता और [illegible] ती को कमजोर करने लगी । इस समय स्त्री सारे अधिकारो से वंचित हो चुकी थी केवल भोग्या बनकर [illegible] थी । समाज सुधारको ने स्त्रियो की दशा सुधारने के लिए अनेक प्रयास किये । सती प्रथा, बालविवाह, एवं विधवा विवाह के लिए आन्दोलन छोडा और उनके निवारण के लिए कानून भी बनाये गये ।

महात्मा गांधीजी का स्त्री उत्थान :–

गांधीजी महिला एवं पुरुष के मध्य किसी प्रकारका भेदभाव नहीं देखते थे । उनके महिला संबंधी विचारो को निम्न आधार पर वर्णन किया जा सकता है :

(क) महिलाएं पुरूष से भी कही ज्यादा सक्षम :–

अपने सत्याग्रह आंदोलन में गांधीजी ने स्त्रीयों को सिर्फ इस कारण ही आमन्त्रित नही किया की वे स्त्रियों को पुरूषो के समान समझते थे, लेकीन इस कारण भी किया की वे स्त्रियों को अनेक मामलों में पुरुषों से ज्यादा श्रेष्ठ मानते थे । उनके अनुसार अहिंसक संघर्ष में स्त्रियाचित धर्म , सहिष्णूता एवं कष्ट सहन करने की मूक [illegible] ऐसे गुण है जिनके कारण स्त्रियाँ सत्याग्रह – आंदोलन को पुरुषों से अधिक सफलतापूर्वक संचालित कर सकती थी । वे स्त्रिको अहिंसा का अवतार मानते थे । यही कारण था की गांधीजीने स्त्रियों की दशा सुधारने के उद्देश से जो कुछ व्यक्त किया, वह गहन अध्ययन व अनुभव पर आधारीत था ।

(ख) दहेज प्रथा का विरोध :–

स्त्रियों के प्रति गांधीजीने अवश्विास की भावना तथा उनमें अविश्वासनीयता के सामाजिक दम्भ के विरोध में स्त्रियों को आगे बढ़ने के लिए चुनौति दी । वे स्त्रियों को ही अपने सचिव का काम सौंपते थे और उन्हें [illegible] से भरे हुए कार्यों में लगाने से संकोच नही करते थे । वे उन्हें अबला कहे जाने के विरोध में थे । गाँधीजी ने [illegible] – सुधार कार्यक्रम में दहेज – प्रथा का भी विरोध किया । दहेज – प्रथा ने भारत में मध्यमवर्गीय तथा [illegible] आयवाले परिवारों को नारकिय जीवन बिताने के लिए मजबूर कर दिया था । गाँधीजी के इस अनुकरणीय उदाहरण ने कई धनाढय परिवारों को सादगीपूर्ण विवाह की रस्म पूरी करने के लिए प्रेरित किया । सेठ जमनालाल बजाज ने वर्धा के गाँजी – आश्रम में अपनी लड़कियों का विवाह ऐसी ही सादगी से किया था ।

(ग) स्त्री तथा पुरुष समाज :–

गाँधीजी ने स्त्रियों के स्तर को परिमापूर्ण बनाने के लिए रचानात्मक सामाजिक कार्यक्रम प्रदर्शित किये । गांधीजी ने अपने सहयोग आंदोलन में भारत के आबाल व वृद्ध स्त्री – पुरुष को सहयोग देने का आव्हान किया था । उन्होंने स्त्रियों को पुरुषो के समान स्तर पर रखते हुये उन्हें, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में देश – सेवा के लिए आगे बढ़ने को आमंत्रित किया । उनके सत्याग्रह आंदोलन में विदेशी वस्त्रों तथा वस्तुओं के

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani. Distt. Bhandara
Late N.P.W. College, Lakhani, Distt. Bhandara

बहिष्कार में स्त्रियों ने प्रमुख भूमिका निभाई । विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना देने का काम स्त्रियों ने प्रमुख भूमिका निभाई । विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना देने का काम स्त्रियों ने बखूबी निभाया । गाँधीजी ने मुस्लिम परिवारों में भी पर्दानशीन महिलाओं से वार्तालाप करने में संकोच नहीं किया तथा इस प्रकार उन्हे भी पर्दा – प्रथा छोड़ने के लिए उकसाया । गाँधीजी द्वारा पर्दा – प्रथा का विरोध जिस मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया था, वह यह था की स्त्रियों को पर्दे में रखकर उन पर पवित्रता लादी नहीं जा सकती । पवित्रता की भावना हृदय से निःसृत होती है । यदी स्त्रियों को पुरूषों के सामने उपस्थित होने में लज्जा अनुभव हो , तो वे इससे ज्यादा कमजोरही बनती जायेगी ।

गांधीजी स्त्री और पुरूष मे कोई भेद नही मानते थे । वे स्त्रियों को पुरूष की सहगामिनी कहा करते थे । उनका कहना था की कोई राष्ट्र तब तक प्रगतिशील नहीं माना जाता जब तक की उस राष्ट्र की महिलाये अशिक्षित, रूढियोंसे जकड हुई और दुखी हो । अत: भारत के उत्थान के लिए उन्होने महिलाओं के हित के लिए ही कार्य किये है । राजा राममोहन राय एव स्वामी दयानंद सरस्वती एवं स्वामी विवेकानंद ने विधवाओंको मान सम्मान के साथ पुर्नविवाह एवं सती प्रथा को समाप्त करने पर बल दिया । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने महिलाओंके उत्थान के लिए एवं विधवा विवाह के लिए काफी प्रयत्न किये ।

स्त्री और पुरूष समानता के विषय मे गांधीजी का कथन है की ''मेरी तीव्र इच्छा है कि हमारी स्त्रियों को पुरी – पुरी आझादी मिलनी चाहिए'' । गांधीजी की विचार थाकी मनुस्मृती मे लिखा है , स्त्री स्वातंत्रता के पात्र नहीं है । कोई ब्रम्ह वाक्य नही है । देश, काल, परिस्थिती के अनुसार परिवर्तन अवश्यभावी है । इन परिवर्तनो से स्त्री को अलग रखना समाज का एकांगी विकास करना है । गांधीजी नारी को समानाधिकार के संवैधानिक अधिकार के पक्षमे तो थे ही किन्तु साथ ही उनका ध्येय था की स्त्री और पुरूष के कार्य अलग हो । प्रकृति ने पुरूष को शक्तीशाली बनाया है । उसे कठोर कार्य करना चाहिए । वास्तव मे पुरूषो को स्त्रियोंसे और स्त्रियों को पुरूषों से सलाह लेकर कार्य करना चाहिए । गांधीजी स्त्री और पुरूष दोनोको अपूर्ण मानते थे । स्त्री और पुरूष एक दुसरे के पुरक है । उनका दर्जा समान है ।

सदियोसे दासता के बंधन मे जकडी नारी के प्रती गांधीजीने आवाज उठाई । उन्हे यह कदापि सहन नही होता था की नारीपर पुरवठा अत्याचार करे । इसलिए गांधीजीने स्त्रियोंको संवैधानिक समानाधिकार दिलवानेके पक्ष मे थे । गांधीजी के हि प्रयत्नो का फल है कि आज महिलाये सभी क्षेत्रोमे कार्यरत है । हमारे संविधान में महिलाओं को पर्याप्त बल मिला है । यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहा पर महिलाओंको बिना किसी संघर्ष के समानाधिकार प्राप्त है । दुसरे देशोमे महिलाओ ने इन अधिकारो के लिए बहुत संघर्ष किया जाकर उन्हे पुरूषो के समान अधिकार मिले है । गांधीजी स्त्री के समानाधिकार के लिए सतत प्रयत्नशील रहे और इसी कारण भारत की महिलाओ को बिना मांगे सभी संवैधानिक अधिकार प्राप्त है । इसके अतिरिक्त सन १९५५ ई. मे हिंदु विवाह अधिनियम पारित कर विवाह के क्षेत्र मे स्त्रियों को पुरूषो के समान अधिकार दिए गये । विशेष परिस्थीओं मे विवाह विच्छेद की व्यवस्था की गई और बहु पत्नी विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया । सन १९५६ मे हिंदु उत्तराधिकार अधिनियम हिंदू नाबालिग और संरक्षता अधिनियम, हिन्दू दत्तक ग्रहण और भरण पोषण अधिनियम, स्त्रियो और कन्याओं का अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम तथा सन १९६१ ई. में दहेज निरोधक अधिनियम

Off. Principal
Late N. P. W. College, Lakhani
Ref. No.
Dt.

पारित किए गये । महात्मा गांधी ने कहा था ''तुम महिलाओं के व्यक्तीत्वको विकसित होने का मौका दो, उनको चारदिवारी मे रखने के बजाय तरक्की का मौका दो, देश के विकास मे देर नही लगेगी'' ।

निष्कर्ष :—

आज भी विश्व के कई ऐसे सभ्य सुसंस्कृत राष्ट्र है जहाँ स्त्रियों को पुरूषों के समान नहीं माना जाता । भारत का प्रधानमंत्री पद स्त्री द्वारा ग्रहण किया जा सकता है, लेकीन अमेरीका में राष्ट्रपति पद किसी स्त्रि को प्राप्त हो जाये, यह असम्भव है । पश्चिमी देशों में अभी भी स्त्रियों को घर का कार्य व सामाजिक कार्य तक ही सिमित रखने की मनोवृत्ति बनाई हुई है, लेकीन गांधीने स्त्रियों को भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रेरित कर एक मूक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया । उनके मार्गदर्शन में कमला मेहरू, सरोजनी नायडू, प्रभावती, अमृत कौर, अनुसूया बेन, मीरा बेन आदी ने स्त्री – जाती को गौरवान्वित कर भारत की आझादी की मशाल को पुरूषो के जैसा प्रज्जवलित रखा । न केवल भारत में अपितु दक्षिण एशिया तथा अफ्रिका में भी जहाँ – जहाँ गाँधीजी का प्रभाव फैला, महिलाओं ने गाँधीजी से प्रेरणा प्राप्त कर अपने आर्थक, सामाजिक तथा राजनीतिक अस्तित्व को बनाए रखने का संघर्ष किया । गाँधीजी के प्रयत्नों के फल स्वरूप भारत में ऐसा सामाजिक बदलाव आया की बिना किसी कानूनी सुधार के भारतीय समाज ने स्त्रियों को समानता तथा स्वतंत्रता का पुरूषो के जैसा अधिकार प्रदान किया ।

संदर्भ सूची :—

मिश्र, अनिल : ''गांधी के विचार'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २००९ ।

जाधव, श्रीराम : ''गांधी की सामाजिक समानता'', महात्मा गांधी अध्ययन केंद्र, औरंगाबाद ।

सिंह, वि. एन. : ''भारतीय सामाजिक चिंतन'', विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली ।

गांधी,मोहनदास करमचंद : 'संक्षिप्त आत्मकथा', नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद,२००६ ।

देशपांडे, पु. ल. : '' गांधीजी'', राजहंस प्रकाशन, पुणे, २००५ ।

मुखर्जी,डॉ. रविन्द्र नाथ : 'सामाजिक विचारधारा',विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली, २०१३।

शर्मा, कविता : ''स्त्री सशक्तीकरण के आयाम'', रजत प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२ ।

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani, Distt. Bhandara

N. P. W. College, Lakhani